



Hargharpanditji

॥ श्री सफला एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सफला एकादशी व्रत कथा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

सफला एकादशी का परिचय

पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को सफला एकादशी कहा जाता है। यह एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस व्रत के प्रभाव से जीवन के सभी कार्य सफल होते हैं, पापों का नाश होता है, दुर्भाग्य दूर होता है तथा साधक को सुख, समृद्धि और अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस व्रत का माहात्म्य भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था।

कथा प्रारंभ

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे प्रभु! पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? इसकी महिमा और व्रत कथा कृपया विस्तार से बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी सफला एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। इसका व्रत सभी कार्यों को सफल बनाने वाला और महान पुण्य प्रदान करने वाला है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन काल में चम्पावती नगरी में महिष्मान नामक एक धर्मात्मा राजा राज्य करते थे। उनके चार पुत्र थे। उनमें सबसे बड़ा पुत्र लुम्पक अत्यंत दुष्ट, क्रूर, व्यसनी और अधर्मी था। वह चोरी, जुआ, मद्यपान तथा अन्य पापकर्मों में लिप्त रहता था। वह ब्राह्मणों, देवताओं और धर्म का भी अनादर करता था।

राजा महिष्मान ने अनेक बार उसे समझाया, परंतु वह अपने दुर्व्यसनों से नहीं सुधरा। अंततः राजा ने उसे राज्य से निकाल दिया।

राज्य से निष्कासित होने के बाद लुम्पक जंगल में रहने लगा। वह दिन में वन में छिपा रहता और रात में नगर में जाकर चोरी तथा लूटपाट करता।

धीरे-धीरे उसका जीवन अत्यंत दुःख, भय और अभाव में बीतने लगा। एक बार पौष कृष्ण एकादशी के दिन अत्यधिक ठंड के कारण वह भोजन की व्यवस्था भी नहीं कर सका। वह पूरे दिन और रात भूखा-प्यासा एक विशाल पीपल के वृक्ष के नीचे पड़ा रहा। उसी वृक्ष के समीप भगवान विष्णु का पवित्र स्थान माना जाता था।

रात्रि में उसने जंगल से कुछ फल एकत्र किए। उसने श्रद्धा से या अनजाने में उन फलों को भगवान विष्णु को अर्पित कर दिया और स्वयं भूखा ही रहा। ठंड और कष्ट के कारण वह पूरी रात सो भी नहीं सका। इस प्रकार उससे अनजाने में एकादशी का उपवास, भगवान विष्णु की पूजा और रात्रि-जागरण—तीनों का पालन हो गया।

अगली सुबह द्वादशी के दिन भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा से उसके समस्त पाप नष्ट हो गए। उसके हृदय में वैराग्य और धर्मभाव जागृत हुआ। उसने अपने पूर्व पापों के लिए पश्चाताप किया और भगवान से क्षमा माँगी। कुछ समय बाद राजा महिष्मान को अपने पुत्र के परिवर्तन का समाचार मिला। उन्होंने लुम्पक को ससम्मान वापस बुलाया और राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया। लुम्पक ने धर्मपूर्वक राज्य किया, प्रजा का कल्याण किया और जीवनभर भगवान विष्णु की भक्ति करता रहा। अंत में उसे भगवान श्रीहरि के परम धाम की प्राप्ति हुई।

व्रत का फल

सफला एकादशी का व्रत करने से—

समस्त पापों का नाश होता है।
दुर्भाग्य और विघ्न दूर होते हैं।
धन, यश और समृद्धि की प्राप्ति होती है।
भगवान श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।
अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

कथा का संदेश

सफला एकादशी की कथा हमें सिखाती है कि भगवान की कृपा से सबसे बड़ा पापी भी सच्चे पश्चाताप और भक्ति के द्वारा सुधर सकता है। श्रद्धा, उपवास, जागरण और भगवान विष्णु के स्मरण से जीवन सफल और पवित्र बन जाता है।

फलश्रुति

जो श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक सफला एकादशी का व्रत करता है, इसकी कथा का पाठ या श्रवण करता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु का स्मरण करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसके सभी कार्य सफल होते हैं और अंत में उसे भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री सफला एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥